

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ यथादिमुखादिः ॥ अथ शान्तिः ॥ अथ स्वास्ती ॥ अथ स्वास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 पत्तिव्याप्तिरस्यो ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथ शान्तिः ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 श्री श्री वदासाय विवेकत्या प्रोक्षणीः संस्तुत्या येवत्या ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 कुर्वन्त्युत्तरे पञ्चमनाथाय ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 पूर्ववदुत्तरे पञ्चमनाथाय ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 मः ॥ १ ॥ अथ सव्याधाने दारहालेदायाद्युक्तात्मनेषां वैश्वस्य बहूपशोर्गदादुनिमाहस
 चानुत्थाप्यपञ्चमनाथाय ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 अथ स्वास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 मनेन शान्तिस्तथापामिधेन शान्तमनाथाय ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 अथ स्वास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 नपत्त एतस्य परीरिच्ये देवागानुविदारनिवर्हिह स्वाशान्तिस्तथापामिधेन शान्तमनाथाय ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे ॥ २ ॥
 अथ स्वास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 अथ स्वास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 अथ स्वास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे
 अथ स्वास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे ॥ अथाभ्युत्थानादिपञ्चमनाथाय ॥ अथास्ती ॥ अथास्ती पात्राणां कर्मवदिरस्युत्तरे

राम

येका ४ - येनाम विद्विः प्राह विष्णु र ही नि विष्णु र प्रतिग कानि चर्षी सि सना नामा मु
यनामि वसूर्यः ॥ इ मन मभि निष्ठा मि को मा नु ष्या मि हा सती से न म पु प वि शति पा द्यो
रु सं विष्णु र प्रा सी ना य रा व्य पा हे प्र स्या ल्य द सि ए प्र स्या ल्य प ति का ल ए से द सि ए प्र
थ मं वि श जो दो हो सि वि न्यो दो ह म सी प म पी पा पा ये वि रा मो दो ह ए से र्षे प्रतिग कानि
न्या प स्या द्य का मि . स की न्का मान वा प्रु वा नी नि नि न ये न भि म जे ॥ समु द्र वः प्र हि ति ला
मि र्वा यो नि म भि ग छ न ॥ अ रि ष्ठा से मा के ती रा मा य रा से वि म स प ह स्वा वा म स्या भा
ग न्य ती सा स ६ स ज व र्षे सा ॥ न मा क र त्रि ये प्र ज्ञा ना म थि प नि प श ना म रि छ त नु मि ति
॥ मि त्र स्य त्वे ति म धु प के प्र नि श ने हे च स्ये ले नि प्र ति ग कानि स जे पो री क ला द सि ए
स्या ना मि क या त्रि . प्र यो नि न म श्या वा स्या पा न्न री ने ये न आ वि छ न नो नि ष्ण ना मी स
ना मि का गु छे न च नि नि रू ष्य ति ॥ न स्व त्रि . प्र ष्ठा नि प न्म धु नो म ध यो प र म र्द २
प म ना धि ने ना हे म धु नो म ध यो न प र मे ए रू प ए ग ना ये न प र मे म ध यो ॥ आ दो
सा नी ती म धु म नि मि वी प्र स च पु त्रा या ने वा सि जे यो त र न्क प्रा सी ना यो ति छ द्य वा
त्स र्षे वा प्रा ष्ठी वा न्क प्रा ष्या सं च रे नि न ये द्य च म्य प्रा ए ग न्क म श ति वा ष्य प्रा ष्य न्की
प्रा ण क्वा . अ ह्नु क र्ण योः श्यो च वा दो र्षे ह्नु र्वा शे ज्य ॥ रि ष्ठा नि मे । गा नि नि न न्

समंजसपतिसेमंजननिश्चयेवासायापोहृदपातिनी॥सर्मानरिष्यासंभानाशमुदेष्टीद
धातुनाविनि॥पित्राभ्राताहायमहीत्यानिष्कामनिर्घरेषिजनसाहृदिरिरोनुपेवमा
नीया॥हिरएवपतिविकर्ताःसत्यामनेनसांवरौहिससाविसर्पिनौसमीक्षयस
द्योश्चक्षुरपतिह्यपिठिवांपराभ्यसुमनाःसुवर्णा॥वीरसूहेवकामाःस्योनाश
नोभवहिपदेशंयत्तुष्यदे॥सौमप्रथमोवित्तिदेगंधर्वोवित्तिद्वतरःतनीपीति
विपातिस्वरीयसोमर्षजा॥सौमोददनेभर्वापुंगंधर्वोःदददनेष॥रविमपुजा
स्वाहादग्निर्महामयोरमां॥सानःपृथागिनतमागिरपसानुपुःउगुनीचिहृ॥
स्यामशंनःप्रहरामशेषेपस्यामुकामोबहवोनिविष्वाशति॥८॥प्रदक्षिणमग्नि
पर्वोनीपेवेषुपश्चादग्निस्तोजनीकटेवाहसिलेवाहेनप्रदक्षीपविशसंनवारध्या
द्याशब्दभभागेमहावाहनयःसर्वेप्रापयन्तिजपानापसई-स्त्रिष्टसर्वेननि
सई-सर्वेजप्राहमहोवाहनिभ्यःस्त्रिष्टसर्वेदग्निदग्निःसर्वेप्रापयन्तिजपान
जापस्यानश्मेनैवावापस्यानेविद्योहेशब्दतत्तच्छब्दाभ्यातानास्त्रजानेन्येन
कर्मणोहेदिनेवचनाविनेचयित्तिश्चाकृतिश्चविज्ञानचविज्ञानिश्चमनश्चशब्द

रीश्वरपूर्णा मा संख्यरुद्ररुद्र संतरे च प्रजापतिर्ज वा तिरा परस्मैः प्रा म एतु य प्रतना ज म सु
 ॥ न सं वि शः सम न मे ल स धीः स उ ह्यः स इ ह ह्यो च भु य स्वा रे स्वग्नि भू ज्ञाना मधि पति.
 सना वधि द्रो ज्येष्ठा नो य म. ए पि न्या वा सु र ने रि स स्व सु धी दि व खे ई मान स जो ला व
 हस्य ति रो ह ए ग मि त्र. स सा नो व र ए ग पा ४. स मु इ स्तो थो ना म न र रे. सा म्ना ज्य नो
 मधि पति न न्या व त सो म ३० प धी ना ६. स वि ता प्र स वा ना ६. रु द्र प शु नो ल वा रु द्रा एण
 वि ह्यः प र्वे ना ना सं र तो ग ह्य ना मधि प त य की मा वे नु पि त र : पि ता म हा प र्वे त ता
 म हा ॥ इ ह मा व न्या मि त्र ह्य ए पा सि स्त रे स्वा मा ति र्व्य स्वा पु रो धा पा मे सि न्चि रे
 ए प र्पो दे व ह ४. स्वा रे ति स र्वे ज्ञा नु य ज स ग्नि रे नु प्र य सो दे व ता ना ४. रो ध्ये प्र तो मु
 च नु म सु पा रो त् ॥ त द व ४. र भा व र ह्यो नु म न्य ता य थो ४. र्क्षी धी न म य न रो दा स्वा
 हा ॥ इ मा न त्रि श्वा य नो गा रे प सः ज्ञा म स्वे न प नु दी र्घे मा धुः ॥ अ शू यो प स्वा लो
 व ना म स्त मा ना धी व मा ने ह म मि वि न्च य ता मि य ४. स्वा हा ॥ स्वा स्ति नो अग्नि दि वा
 प दी र्वा नि श्वा नि वे ह्य म यो य व र ॥ वे द स्यो म हि वि धी ज्ञा न म श स्त न व स्वा सु इ वि
 ए वे हे मि व ७. स्वा हा ॥ सु र्ग ज्य य धी अ दि ता न ग र्हे न्यो नि प यो ह्य न र नः प्रा धुः ॥

श म

अथेत्तु मत्स्य रमने मः प्रागा वै ब्रह्मणेऽप्र भयेऽएणे नु स्वाहेति परं मः स्व धे ति चै के प्रा शनां
ने ॥ शा कु मा र्पा भो ना शी मी प ला श मि श्रा न ला ना ने जो लि नां ज ला वा व पा ने ला न हो
ति स ॥ इ ते न ति छ स्व ष म ए वै वे इ म् ॥ प्रा नि म य ई न ॥ से नो अ य मा दे व प्रे ता म् च
नु मा प ने स्वा हा ॥ इ प्प ना पु प न्ने ला जा ना व प ति का ॥ अा पु ष ना न स्त मे प ति रे ध ता
जा न षो म मे स्वा हा ॥ इ मा ह्यो जा ना व पा म्प शो स म्प दि क र लो न व ॥ म म न्ता प ष
स व न ने न इ ति र नु म म्प ता मि प ॥ स्वा हे स्य था खे प द ति ए ॥ अ स्त ग ता नि सा ग र्
नृ षा मि ने से भ ग ता य ह स्त म था प सा न र द्धि र्प था सः ॥ अ गे अ र्थ मा स वि ना
पु र धि मे ह्य वा दु र्गा हे म स्य धि दे वा ग ॥ अ मो ह मा सि स्वा त र्सा च म स्व मो अ ह ॥ सा
मा ह म स्ति न्ने दो र हं च ष्य वे ॥ ना वे ति वि व हा व हे स ह रे लो द धा व हे ॥ प्र ता प्र ज
न पा व हे पु त्रा न्ने पा व हे व ह न् ॥ ने से नु ज र द्ध य सा प्रि थो रो धि ह्य स मे न स्य मा
यो ॥ प र्थे म श र द श न्तो भि म श र द श न्त ॥ अ ए वा म श र द श न्त मि ति ॥ इ ॥ अ धि
न म श्र मा न मा शी ह य स्य न र नो ग्ने र्द शि ए पा दे ना र ह म म र मा न म र्मि व ल ६ ॥ अ धि
श भ व ॥ अ भि ति छ षे न म्प लो व था व स्व प त्त ना म न इ स षे गा यो गा म ति स र स्व नी मे
इ म य म्भु भ गे वा जि नी वा ने ॥ के स्वा वि म्प स्य म्भु न स्य प्र ता या म स्या ग्व न . व म्भु न्

६. समभयवस्वाविश्वमिदं जगत् ॥ नाम धरायां गार्गा मिवास्ती शा मुनये यशह
 स्वयं परि का म त स्तु ॥ प म ये प ध्य वे द स्य पी न ह न ना स ह ॥ पु नः पालिभोजिमाहाये
 प्रजया सहे से वे दि रे प रे लाजादि च त्ते चर ॥ श र्पि कु ष्ठ पा स की ल भो ना य प लि भा गा य
 स्वाहे ति त्रिः परि णो का प्राजा प से ६. त स्तु ॥ ७. अ धि ना सु दि वी ६. स स प दानि प्र
 का म म ले क मि षे ह पु नो त्री ति रा य शो पा य च त्वा रि मा यो न वा य पे च य शु भ्य ७ उ
 पु नु भ्य. स र्वे स स प दान च सा मा म नु व त्तो भ व वि ष्णु स्तान य ति ति स र्वे ज्ञा भु ष्ण
 ति ति ष्ण म ल प्र भ स द वे भ ६. स क ये र का द ति ए ते गे री वी ग प त स्थि तो भ व स त र त
 ए के वा न त ए ना म र्दे य भि धि च त्वा पः शि वाः शि व त माः शो जा शो त त म स तो र्त्स ह
 ए व नु भे ष त मि स्तो षे रि षो नै च त स्य भि र धि ना ६. स र्प्य मु दौ स य नि < त्त्सु स रि
 स्य पी स्य द सि ए ६. स मे धि ह द य मा स र्भ ते म म च ते से ह द य द धा मि म न चि त्तु मु नु
 वि ने ते अ स्तु ॥ म म वा च मे य म ना जु य स्व प्र जा प ति ष्ठा नि पु न त्त स य मि स्थि वा
 मा भि मे ष व ने तु मे ग ली रि पे व ध रि तो ६. स मे न र श प त ॥ सी भा ग्य म स्थि द त्वा पा या
 सा वि परे त्ते ति सा ह ७ पु र ष उ षे ष्य प्रा षि द य्व भु र स ज्ञा ग र ६. प्रा न इ रे शे ति
 ने च मे ए प प वे षा य तो ह ग यो नि पी द कि हा ष्या ६ इ ह पु र षाः ॥ इ हो से द स्य द सि ए

राम

को वदुस्वोद्यो पविरो न चोदो नु नरि नि चोके प्रा च लं कु रीत् ॥ १३ ॥ अथ ली मसी शा वा म
 भि हा हो सि ५५ पितृ पते न य जे न मं धा म पि हे प ली शो क्ता लि पु त्र का मा त न ए ता मा इ ति
 कु रो स्ता धे ने ति न र इ त्य लो का मं चो लि च्छा प नु न इ ति ज पि त्वा हृ द य मा स भ्य पू र्वे च ह्ये न
 चा लि नो प स्था भि र रा ति भ ग प्र ए त रि ति प्रा गु ते दा नी मि ति कि र नो मू र मि ति स्व धे त गा
 य त्र ए ति त्र ति मं चं पु त्र का मो भि ग छे मि ति ॥ १४ ॥ अथ दि गर्भ न र्भी लो ति इ ध्या म्बे न पु
 ध्या पु पो ष्य पु ष्य ए मू ल सु स्था ष्य च सु र्धे नि रु ना ना पा नि शा वा मु द ये वे पि यु द र धि ए ष्यो
 जा ति का पो मा स्ती च मे य मो ष धी जा प मा ए रा ह मा भ्या स र स्व ती ष्य ए रा ह रा सा पु त्र
 पि तु रि त्वा ना म ज ग्म भ ति ॥ १५ ॥ अथ पु ४ स च न पु रा स्य र स इ ति मा शे त्ति सो य रे ति पि त्वा
 य ह ४ पु ६ सा म स्त रे ए चो द मा पु ष्य न म द ह र पु वा स्या त्वा ध्या ह ने वा स्य सो प रि धा ष्य न्ये
 चा वे श हा छे गां स्व नि रा वा मु द ये वे पि यु द पु र्वे च दा शे च न ६ ति रे ए ग भो ष्य से न ज इ त्ये
 ना भ्यां कु रा के र क ६ सो मा ६ रा चै के त्त म पि ने चो प स्थो ल त्वा सि पा दि का म ये न वी र्ग इ ति
 वै क्त म ये ल वी र्ग इ ति वि र्ग ये न म मि मे त्त प ले स्य र्गो सो ति प्रा व्ति कु क मे भ्य ग १६ ॥
 अथ ली मसी भन पने पु ४ स च न य स्य य मे ग भो म सो ष ये म वा नि ल मु ह मि ष्य ४ स्वा ली पा
 क ६ अथ पि त्वा प्र ना प ने हु ला प च्छा द न्ने म इ म पो र उं ग वि द्यो सो पु ग्मे न स य लु ग्ग रे

राम

१३

नोद्वय र ए ग वि मि अ इ र्भ वि ज लो स्त्रे ए पा रा ह ल्या वी र न र जं भु ए ग पू ए च भ्रे ए च सी म न म
खं वि न प ति भू र्भु व ख वि ति ब्र ह ति म हा व्या ह ति मि र्वा भि व ज मा वे धा ति अ प मृ जी न ती
व शं वृ जी व रू ति नी भ ये स था ह वी श ग ग वि नी रा जे न र्भे सं ग ये ता जी वा ष ण्यो जी र न
र ह ति नि पु ल्का म ये के गा धा मु पो हा ह रं ति सो म ये व नो राजे मा मानु पी राजा अ वि सु त्त
च क्रा सी रं स्ती रे लु भ्य म सा वि ति यो न दी मु पा व वि ता भ व ति न स्था ना म ग रू मि ने तो
जा ह्य ए भो ज न ॥१७॥ सो ष्य ती म दि र भ्य र्शे त्प न त्प द्या मा स्या इ ति प्रा ग्य रे वि न इ स्य धा
न श व प त न म वे स प ष्ठि शे व ल रे श न जे रा ष्ठ न वे नै न मा ६ से नै पी व री न मि उ व ता प्र
त न म व ज रा पु प ध नो मि ति जा न र्भु कु मा र स्था षि ल्या पो ना ष्या मि धा ज नै ना पु ष्ये क रो
स ना मि क षा सु व र्णै न हिं त पा न धु च जे प्रा ष प ति च नै ना भू त्व वि द धा मि भु व स्व वि द
धा मि भू र्भु व खः खः स वे ल वि द धा मि स पा स्या यु ष्ये क रो ति ना भ्या इ हितो वा क र्णे ज प स
ग्नि रा पु षा न्न व न स्य ति भि रा पु षा स्ते न त्वा पु षा पु षे न क रो मि सो म आ पु षा न्न आ
ष वि भि रा पु षा स्ते न त्वा पु षा पु षे न क रो मि त्र सा आ पु षा न्न त्वा ह्म णे रा पु षा स्ते न त्वा पु
षा पु षे न क रो मि द श आ पु षा न्न स्ते ५ ए ते ना पु षे न स्ते न त्वा पु षा पु षे न क रो मि ॥ १८ ॥
प य आ पु षा न्न स्ते ज नै रा पु षे न स्ते न त्वा पु षा पु षे न क रो मि पि न र आ पु षा न्न स्ते स्व

धामि रा सु क्तं न स्तेन ह्य सु धर्मं करोति यत्तु आ सु क्तान् न दत्ते एवमि रा सु धर्मा स्तेन ह्य सु धा सु
 धर्मं करोति मि क्तं मु क्तः आ सु धर्मा न्ते स्य न ती मि रा सु धर्मा स्तेन ह्य सु धा सु क्तं न करोतीति चि स्त्वा
 सु धामि तिस यदि काम येन सर्वं मा परि पादि नि वा यत्तु हिन म भि म् शो दि व स्वपटी स त स्या न् वा
 न स्तेन मा म नै परि ति न ष्टि त्र लि ति रा पे च प्रा स एण न च स्या च्च सु धा दि म म नु प्रा लि ने ति
 पूर्वी सु धा ध्या ए ति व्या ने ति दा शि एण वा ने स प रे उ दा ने सू त्त र स मा ने ति पंच म उ परि ष्टा द
 वे स मा ले ण सु धा स्य न य वा क्ते ष्वी र तु परि क्तं म म वि धा मा ने षु स च स्मि न्ने श जा ने भा वं ति न
 म नि मं च प ते वे द नै भू मि ह द यो दि वि च्छे द म सि स्त्रे नं नि द ह न कां त दि धा स इ प म श र द
 श न्ते जी वे म श र द श न्ते श ए णा म श र द श न्ते मि स धे म म भि म् श स ज्ञा यं च प र सु र्भ
 व हि र ए व म क्तु ले भ व ॥ आ त्मा वे पु आ ना मा सि सृ ष्ठी व श र द श न्ते मि स धा स्य मा न र म
 मि मं च य न इ रा सि मे वा व रू णी वी रे वी र म जी ज न धा ॥ सा त्वे वी र व नी भ व ता म्ना न्वी र
 व लो क र दि स या स्य द सि णा ६- स्त न्ते प्र स्या त्व प्र य च्छ ती म ६- स्त न्ते नि लि य स्ते न्ते न्ते न्ते
 त र मि ना भ्या मु द पा त्त ६- त्रि र स्तो नि द धा सा पो दे वे पु जा य य ध धा दे वे पु जा य य ॥ ए व म
 स्या ६- सृ ष्ठी का षा ६- स पु त्रि का षा ६- जा य ध ति दा रं दे श सृ ष्ठी का षि मु प स धा धा पो षा ना
 त्म धि वे लो यो फ लो क र ए मि ष्टां न्ते र्भ पान ग्ना वा न पे ति य इ म र्के त उ प वी र रो दि के

रा म

मउलुहमल ॥ मलिक्तु शोभा एतच्छचमोनरपतादिन क्वाहा ॥ आलिखेन निमिष किं
 बहजउ पश्च निहै येषः कुभीशत्रु पात्र पाणिन माणिहै र्ही मुखेः सर्पे पार एतच्छचमोनरपता
 दिनस्वाहेति पश्चिनुमा रउ पश्चैजासुन प्रष्टा घोसु रो पेल वा पिता नः आधा पत्र पतिवृत्त
 रे सुपु कु रः कु कु रो बाल बधन ॥ ये ज्ञेय च के स जन मस्ते अस्तु सी सरो लपे ना पुन पुन ह्य
 स्य ॥ पने इ वा वर म ह्यु स लु कु मार मे व जी वणी या ॥ ये ज्ञेय न क स जन म स्ते अ स्ते र्ही म्
 से ल पे ना प ह र न स्य सी प ने सर मा मा ना सी सर पि ना र्णा भो व लो भा न री ॥ ये ज्ञेय न क
 स जन म स्ते अ स्तु सी सरो लपे ना प ह रे स्य भि न्य पति न नाम य नि न र ह ति न्य ष्य नि न र्हा
 प्र ति य न्न व य व हो मो य न्न च मि न्य धा मे र्ही ति ॥ १८ ॥ अ पा तो व म ल त न ने प्रा प ष्यि नं वा
 श्या स्या मो प स्या भा पी गी हो सी म हि यो ब ड वा वा वि कु नि प्र स थे तु प्रा प ष्यि ति भ वे न पु
 र्त द शा हे च नु ए गी र्ही र व र्णा एण कार्ण्या य मु प स ६ ह रे न्य पु स ब हो दु क्वा श्य स्य श मी ह
 व दार गी र स र्पे पा र्श्वे यो म य ६ ति र ए प दूर्वा कु री स प ल्य वै र षो क ल शान् प्र पू र्वे स र्पे य
 श्री नी हं प नी र्ना प ष्यि त्वा आ पो हि थि ति च न स्य भि क म्पा न ष्यि अ इ ति च न्या प ये दे ए प च
 वा र्णै र्मा प अ ब ह ने स्य पा ष्यि ति र्ना प ष्यि त्वा अ ल क स्य सी र्भे यु प वेश प न च मार ज र
 स्या ली पा व स्य गु हो स्य ने ये स्वा हा प न मा ना ये स्वा हा पा थ का प स्वा हा म र्ना म र्ना हा

भास्वरापस्वाहा मन्त्रः ॥ १ ॥ स्वाहा वमा वस्वाहा न का वस्वाहा मन्त्र वे स्वाहा न हारि स्वाहा भ्र
 त्र ये विभ्र ह्यते स्वाहा हे त्त दे व ग्दो स्या त नि मि ते षु ॥ १ ॥ क क पो न ग्दः ॥ २ ॥ र्थे नो वा ग्द प्र वि
 श त्ते मः ॥ ३ ॥ रो हे इ त्ते नो म भु ज्ज ल वा भ वे दु दु वे न ॥ ४ ॥ अ च ल ना स न श य न पा न भे गे षु ग्द
 गो धी का षु लो स शरी र स र्पे ध्ज वि ज रो सा र्थे नो म् ॥ ५ ॥ ३ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सप्त

ॐ

मंलं तं नु या न्त तद्वि त्त म् सु जा शार मा कारा न ३- दि वि धे त वि न ३- श र्म त्रा स ल क् ष्य व र्मे स वि
 ष स्य पु से वि वे र प स्य च न् चं ये मा सि नि त्तु मा णि का स र्प मु र्दो श ष लि न त्तु वार ति ॥ २३ ॥ प्रा ष्य
 स्व ग हानु व ति ष्ठे ते पु र्वे व सु न्ने द द्वा ज प स्य गा द गा न्त म न्न स्मि ह व मा रा धे ना ष ये ॥ १ ॥ प्रा ष्य ति
 कु र्त्त ना ना सि स जी व श र्द र्द शो न ति स र्था ष्य मु र्दु नि म न्ने ति प्र ति प जा ष ने ष्टा दि कारे ए ष ति
 द्वा मि स र्द स्या पु ष यो ती लो व श र्द ३- श न मि ति ग वा षा दि कारे ए ष ति वा जे द ति ते श न ते ज प स
 स्ते ति वं धे म ष्य व न्ने जी वि मि त्र श र्पो वि ष्य वार स्य धु र ॥ १ ॥ अ स्मे श न ३- श र्दो जी व मे षा ष्य ति
 जी श ष्य म्प न्ने इ ति वि त्रि नो इ ष्ये ष्टा नि इ वि ए ण नि धे ति ति ति द हा स्य सु न ग म्प म ति ॥ १ ॥ पा ष ३-
 र षो णा म रि ति स न्ना ३- श्वा मा ने वा च सु रि न्त म न्दा मि ति स न्वा वि त्तु म् शो म मे वा न ति ष र्
 ष्यो ॥ २३ ॥ १ ॥ अ ष्ये वा श न स्या लो पा ३- अ ष यि वा ष ना गा वि इ ष्यो इ ति ते शो ति रे नो
 व न्ने म ज न व न्ने वा सा वि ष्य र्वाः प रा जी व द ति ॥ स नो मे इ ष्ये त्ते द हा ना र्धे नु को ग स्या न् प
 सु सु नि न् स्वारे ति वा जे नो ष्ठे ति च दि नो या ३- श्वा लो पा य स्य न्ने श ति प्रा णे न न्ना म्प ष
 स्वा हे ति पा ने न ग धा नी शो म स्वा हा च सु षा र्वा ए ष ती म न्त्वा हा ष्यो जे रा व शो ष शो म स्वा
 हे ति प्रा श न मे स र्वा न् र- स्वा श र्ध मे न्ने मे न्ने त ३- अ ष यि न श र्पो ये नु षो ३- श न ति वा ह न कार
 मं तु ष्या र ति श्च ले भा र द्वा ष्य मा ३- से न वा न् ज सारि का मे ष्य च पि त्त ल मा ३- से नो न्ना ष्य क

राभ

७

मस्य मासैर्ह्येव न कामस्य न च प्राणाद्योऽसु. कामस्या ह्यप्यत्र न च स्वकामस्य संवेस वै काम
स्यान्वयपीष वा ततो वा ह्यण भोजने ॥२३॥ इति ग्रहस्य विप्रैष मका इत्यमासः ॥ सीबन्त
शैवस्य च कर्णलक्ष्मीको प्रतिहतेषो इशो वैश्वस्य वैशो तो मयाम ॥ लवा सवैषा वा ह्यण
न्मोज विद्यो मा ना कु मार मा दा मा ध्या ग्या हने वा ससी परिभाष्या कः ॥ प्रा चय प स्वा द त्रिरूप
विशस्य न्यार श्व अह्या ह ति ह स्या प्रा श नो ले शी ता स्व प्रु स ग्रा सि च सु उ द ने नि ह्य दि ने वैश
श्व षे ति वैश र म प्रै ति चै वै शो ने न या ज व नी त पि इ ह न पि इ ह प्रे वा प्रा स्य ति तः प्रा दा प द शि
ए गो दा न तु द ति स वि वा प्र सु ता दि व्या प्रा म उ द नु ने न नु की पी पु ता म व ता प व नै स ह ति ॥
अ ए पा रा ल ह्या वि नी प नी ऐ कु श न र ए न्य न र्ध धा सी ष धे प श ति शि बो ना म ति लो ह सु र
मा हा प ति व र्त्त वा मि ति प्र च य ति ॥ ये ना व प त्त वि ना सु र ए ता सो म स्य रा हो व र ए स्व वि हा
नृ ते न ब्र ह्मा णो व प ते द म स्वा यु श्व क त्त र द धि र्य था स दि ति स वै शा नि प्र खि प्या न र ह्ने गो म भ
पिं डे प्रा स्य स्य त र नो धि मा ता ए व दि र प र नृ सी भि न र ये श्वो द ना च य प था ग्या मु ध मि ॥ स
यो त र नो ये नै भु रि श्व रा दि वै जो ब्रु प था दि स र्प ॥ ने न ने व पा मि ब्र ह्म ए ग जी वा न वै जी य ना य
सु ह्यो न्या प स्य स्त प ह ति त्रि . सु र ए शि र . प्र द सि ए प रि ह र ति स नृ ख वै शो ने प त्त र ए ग
जो ता ह्ये रा सा व ग्या वा व प ति वै शो वि शि शे मा स्या मुः प्र मा धी मु श्व मि ति त्र वै शो ने

सुर्वे रणे बलि मस्तो जेष शस्त्रोऽथ विर ३ स मिहं । अनाहनस्य वसने अरि ह्यु . परीदे वा न्यजीमं
दधे व निरिदे इ प्र पथति न प्र नि प्र कानि यो मे वे ३ . परा परं दित म स्वधि भू म्पानि म ह पु न र ३ इ
आ पु पे न स ए अ ल न च स्वा पे नि दी स्वा न दे वे दी र्घ स ज म्पे नी ति व च ना द था स्वा भि रे र ल ति ना
ज लि पु र प स्तो पो ति वि ति ति स नि रे धे न ३ सु र्पे म्दी स य ति स ज्ञ श्च रि त्य था स्प द क्षि ण ३ वं ग धि
हृ द य मा ल भ ने म म ज ने ने हृ द य द था मि म म वि त म नु चि त्ते ज स्त म म वा च मे न् म न ज्ञु स्व स्व
व ह् स्व ति ष्टा नि सु न तु म ह्य मि स था स्प द क्षि ण ३ ह स्त ग र्ही त्वा ह को ना मा सी स सा ब ह् भो ष
ति प्र सा हा धे न मा ह् न स्य ज ह् न वा पे सी ति भ व न् न ह् स्ये मा न ३ इ स्य ज ह् न वा पे स्या नि रा चो र्घ स्त
वा ह् मा वा र्घ स्त वा सा धि स धे ने भू ते भ्य परि द्वा ति प्र जा प त्त पे त्वा य द्दा मि दे वा प ज्ञा स वि त्ते
परि द्वा म्प भ्य स्त्वा भू ते भ्य परि द्वा ति द्वा वा प थ री भ्या त्वा परि द्वा मि वि त्ते भ्य स्त्वा भू ते भ्य
परि द्वा मि स र्घे भ्य स्त्वा भू ते भ्य परि द्वा म्प रि ष्य र ति ॥ ३ ॥ प्र द क्षि ण मा ति परि सो पे वि से न्वा
र न्धे ३ प्रा ज्वा ह ती हि त्वा प्रो श ना ने ३ धे न ३ श ६ शा स्ति ज ह् न वा र्घे स्य पो श ना ने क र्मे कुर मा दि वा
सु सु प्थ्या वा धे य च्छे स मो ध मा धे स्य ३ पो श ना ने स था से स धि ति म न्वा हो न र तो ३ जेः प्र स्य इ न्वा
को प वि ष्टा यो प स न्ना म स मी ह्य मा णा य स मि शि ता म द क्षि ण त वि तु ष्ट न्क प्रा सी ना य नि षे य
को र्के न्दी श श वा ध र ती ये न स ह् नु व त्ते य न् स व ह् न र णा प्र णो से च नु र्धि ३ श स ह् द्वा द श हि षे ह्

महत्वासयस्वैव गायत्रीया सुहृत्तमस्तु सुहाय्ये नो वै ब्राह्मण इति च तेषां स्त्रियुगं ३ राजस्य स्वज गती
 त्रिहास्य सर्वेषां वागा वत्री ॥ ४ ॥ अत्र जस मिद्याधान पाणिना शिपरिसमूहस्यै सुश्रवसीमा कु
 र ॥ यथा ल मने सुश्रवसु श्रवसि व मा ४ सुश्रवसी श्रवसु सु ॥ यथा ल मने दे वा ना यजुषि य
 निधिपाऽस्त्वैव महत्तु व्या एणै इत्यनिधि वी भू यासामि नि प्र इ शि लामे नि वरु इयासाम्यस
 निधमा दधात्य ग्ने यिसामि भू महार्थे अत्र तेजाने वसेथ यासु म निस मि धो स ए व मह मा सु यामि
 धवा व रै सा प्र पा प श भि ज्ञे ह व नै से ज स मि धे जी व पु नो म मा रा यो मे धा य ह न री न्य नि र व
 रि षु वै र न्वी ते ज स्वी ते ज स्वी त्रि ल व स न्वा शि भू पा स ४ स्वा ले से व दि ती यो ल यो ल ती य मि धा र
 इ ति वा स मु च्चु यो वा पु नै स री स मू ह न प र्ति ए ए पा ए नि म न य मु ख वि म ये त नु वा म ये ति त न्ये त पा
 ह्या पु री ये त स्या सु ते दे हि व री ए यो सि व री मे दे हि अ नि ज मे त न्वा ३ ज न न्वा ३ शो ष ल गे धा मे दे व
 स वि ता आ द धा तु मे धा दे वो न्वा र स्व ती आ द धा तु मे धा मा रि जे दे वा व ध ना पु ष ३ र स ज नि स
 गा न्या ल न्य ज व से गा नि च म आ प्य य ना वा के प्रा णे स्व स्र यो ज य शो व ल मि ति आ य ष मि ति कु
 र जे म स्म न्ना ल क्क टि ग्नी वा पा द शि ए ४ से ह दि च आ पु री ति शि व नि मे ये ॥ ५ ॥ अ न्नि र्दे य र्पे च र
 ती म व सु के न्वा ल लो मि शे त म ये न्वा ३ रा ह न्वा म व द स्य मि इ य स र्ति स्तो म सा र य्या मि न्य ष
 द्वा द हा परि मि तो वा ना न रे प्र य मा ति आ वा यो पु र्ने स्त नि व द पि न्वा वा ग्प नो ह ३ श व ति ये दे से के
 हि ४ स ग्ग र र्पा न्त मि ध आ ह स न स्ति न्म र्ना पू ये च दा धा य वा यी वि स ज ने ५ ३ श य हा रा ल व

शान

एतत्सोऽस्मादेव धारणां प्रतिपरिचरणात् यस्मिन्सुखाभिस्तात्पर्यो मधुमा ४-स मज्जनोपसर्पितनक्षीगम
नाऽनेतादनादानानि चर्चयेदद्यात्सुखीति ३-शास्त्रोपनिषदनुसृत्य चैवरेहा दत्तव्याऽऽरोवजतिवि
दपाचन्द्रकणवावासा ४-सिद्धाणामेतामिदं कर्मोपनिषत्सु तत्रैव ज्ञातुं लक्ष्मीरव दे-रज
न्यस्याजगत्तन्वायेत्यस्य सर्वेषां वागव्यमसंतिप्रधानत्वात्तन्वीजीर शनात्तात्पर्यस्य धनु
र्वाऽऽजन्त्यस्य प्रीतिर्विशेषस्य मुजाभावे कुशाशासनकवत्त्वजानां पालाशो ज्ञातुं लक्ष्मीरव दे-रज
राजस्यैवात्सर्वेषां विश्वस्यैव संसमितो ज्ञातुं लक्ष्मीरव दे-रज संसित संसिपस्यैवाणसमितेवि
श्वस्यैव शक्तं भवते वा सा ज्ञातुं लक्ष्मीरव दे-रज संसित संसिपस्यैव संसिपस्यैव संसिपस्यैव
ये एतादृशं तत्र सापत्तिर्यथा सा च याने चैवासी न आसी न चेति संसिपस्यैव संसिपस्यैव संसिपस्यैव
चनेषां नो मु-शां च संसिपस्यैव संसिपस्यैव संसिपस्यैव संसिपस्यैव संसिपस्यैव संसिपस्यैव संसिपस्यैव
संसातको व्रतसंसातको विद्या व्रतसंसातको व्रतसंसातको व्रतसंसातको व्रतसंसातको व्रतसंसातको
घातसंसातको : संसाप्यत्र तत्र संसाप्य वेदयः संसाप्यत्र तत्र संसाप्य क्वातकऽनम दे संसाप्य
संसाप्यत्र तत्र संसाप्य क्वातको इशा वर्षा क्वातको स्यात्तात्पर्यः कालो न वसा इति
शास्त्रस्य स्यात्तन्वितः-शास्त्रस्य स्यात्तन्वितः पत्तिस्तथा विद्विक्ता भवेति नैतानुपपत्तौ न
पदे पुत्रे यान्ति पुत्रे चिन्ति चैव देवैः कालातिचयेति पत्तवस्ति पुरसंपत्तिस्तथा विद्विक्ता

मपसेनसंस्कारेणाऽपाननवतेघाट-सककारेऽसुर्वासास्त्रोमेनेष्टाका ममभीरुयुत-अवहायीभवं
नीतिनात् ॥ १५ ॥ वेद-समाव्यख्यानाद्दलचर्मवीथ्याबलानि ॥ शकदादरोवेधपिदेगुरानुजाती
विधिर्विधेयस्तर्कस्ववेद-पदगमेकेनवेत्यमात्रेकाभेत्प्राप्तिस्वापसगएगुरु-सविधेभा
धापपरिष्कितस्वोत्तरतः कुशुप्रागशुभपुरस्ताद्विषयवीथानासुदकेमीनावेकैतरजपअतिष्ठा
नेषुषगोष्ठा नपुत्रोमकोहासबलोविरुत्तसनुदधीरिदिपराभानिजहामिषोशचनसामिहए
हामोलेकास्मादयोगाहिलीतिशामिदिचनेनेनममिभेपिनामिदिपेयदासेअत्यल्पसुभर्वसापे
द्विजेनस्त्रिजसुएगुतीयेनाचमैवाता ॥ सुशयेनाश्वावभ्यविदनापदानदापिनायहएरावादि
केतिवमत्यथेभिः सुर्वासास्त्रोरेरुनमेतिमेकतामु-सु-यदेदविधापवालो-मसविधापो
ददित्यनुपतिष्ठतउथभाजभसुरिदोनेरभिरस्थाव्याजवीविभिरस्थादिनावावभिरस्थाव्यने
रभिरकीरातसेनिकुर्वीविदनागुमयोपभ्रजभसुरिदोभरभिरस्थाव्याववावभिरस्थाव्यावह
संशानिरसिखहस्रसनिनाकुर्वीविदन्मिगमवेतिदधिभिलभवाप्राहवजंदाहोमनव्यासह
लोद्वरेणदना-आवेता-आयापय्युह-वे-जीमे-की-यमागमस्तमिभुवेनवावपिनेयशसुभ
भगेनेनेसुत्साद्यपुन-श्यात्वा-अनुलेपनेनासिकयोर्मरुस्वयोपगच्छतिप्राणवाभौमिनपय
यश्चमिनपययो-वेपनपयतिचिनर-सुध-धमितिपारणार-वनेनमदाहिलानु-विश्वानु-विपुत्र
वेन्सुव-रा-म-हम-शिभ्याभूमास-व-सुवे-वी-मु-रेन-सु-सु-क-ए-भा-भूमासमिह-ह-न-क-सी-न-व-नी

राम

ब्रह्मणा ईशितपरिधास्ये यशोधयिरीपी सुखाप्यारुहिर सिशानचनीवामिशरद पुत्रवीरायस्योपम
 भिसंश्रयिष्य इत्युच्यते यशसात्ता प्रोवाप यिनी परासे ह्यप्यवदनी ॥ यशोभगेयमाविद यशोसा
 प्रतिपद्यतामिहो कथं सुर्वे स्योनर वगीण प्रघ्नादयिनसमनस प्रतिप्रकालि माज्जातरत्तानमपि
 अहोये कामादिप्रिया ॥ नाऽऽहम तिगह्ना नियरासाने भगेन वेस थाकरो धीने यद्यशोपूरसामि
 इत्यकार विपुले पद्यनेन संयचितासमनस प्रावभानि यशोमयी सुलीपेण शिशेवेष्टयेते पुत्रासुवा
 साहस्यालकरतामसिधुमोलकर एभूवादि तिकर्ण वेष्टको रयस्थिसा वे स्थितीशे विष्णुरसीत्यात्मान
 माहरी प्रेक्षते चन्द्रम तिगह्नाति यदेस्पने पदिर विपाफनोमानेनेके हिनेजसो यशसोमा मनेके
 हीति मति ये स्त्रो विष्णोमोपतमि सुपा नरी प्रतिमुचने विष्णोभ्योमानो क्वाभ्यस्य रिपादिस्ववेन
 इति वेलावेदं इनाधनेदनम स्तालनादी निमित्तमपि वास यत्रोपानहस्या पूर्वी लिचेनेत्र ॥ ३० ॥ अथा
 नकस्य यमान्बस्थाम ॥ कामादिनरो नृसगीन वादिवाणि नुर्वीन्नेचगे यत्रयथावेदुदपाना
 यशालन शरीरकलफलच यनसेपि पूर्व एव नश्चानम विष्णुमलघनस्य ननदन संधादिस्य मेही
 लाभ ह्णानि ननुर्वीन्नेह येस्त्रात्तामिशेता यदेवेस्त्रात्तामिशेतापनी निश्चनेवेर्षस्य भावनात्रेजे
 दयं मेवजुः पाफो नम परहनदिस्तान्मानेन गवेसिताजानलो मी विपु ६ धी ६ यद्वचनोपहरोभ्य
 गच्छेत्तन्मिही विनयेति सुमान् सनुल्लमिति ननुल्लभगीलमिति कप्याल पाणी धतु रितीइधनुर्गी

यंती परसेनाय सीने वंश वा मनेन हि सा पाभूमा नृणा पीसिधनम्य सुख पु शेषेन पीस्य मंजरी लेन का
 येन शु द्रमंती न विरतव मीमांसा र्थपी नर टु प्रती न धन स्यात्त्वित्तो ज्ञानमं गो पापे न्तरे वि पा मित्त
 मिश्र ॥ २० ॥ कि सी रा जी वने चरे र मा ३ स्यात्प्रमत्तम पापी क्री रा इ रा वर स रा कु निरा नी वा र ले न म
 संभा धत्त ब सी रा न रा इ सु न का न्ना नि च ना पा म्बु ज पु री वि पी ये न रा ल पे न कु पी न्दु पा च्छा त्ताने न
 न र्धे धी न स से जो द का पी न्दु र्धे तान न्दु य सै रा रो भो ज न ॥ स स न द न ति व बो दी सि नो ध्या त पा दी ले
 कु र्वा न्म न र्धे वा च्छा त्ता ॥ २१ ॥ अ यान प च म हा प हा वि म्बु र्वा द न्ना त्प र्धे स्य स्व हा का रे र्धे र्वा
 कु र्वा ले प्र जा प त्त वे ग रा भ्य कर प वा वा तु स त्त पर ति नू त्त र्धे वि न्दो म र्ती वि जी न्दु ले न्वा वा च्छे पु
 पि न्दो धा त्रे वि धा ये च ह्य वि द्यो व ति दि रं भा य वे दि रा न्ध म धी रो ज्ञा न ले ने री वा य सु पी य वि न्दो
 र्धे न्दो वि द्यो न्दु र्धे न्दो
 लतः पा न्दु नि लि वि ता न रा व र स्यो दि ति नि न वे घ र्धे न न ने र्धु ॥ २२ ॥ अ यान्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो
 र्धे न न र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो
 न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो
 न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो
 न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो न्दु र्धे न्दो

राम

गाविष्ठाभ्यामहनीर्जयोतिष्यिष्ठाभ्यामपहस्यन्वेदेतरीष्ठाभ्यामपवहसिपजुर्वेदेदिनेसूर्योयेतिसा
यवेदेदिगभ्यश्चइमेसरस्यवेदेजहणेच्छेभ्यश्चेति सर्वप्रजापतयेदेवेभ्यः ऋषिभ्यश्चाह
वेदेभ्योसुस्यस्यतयेनमनपइनिचिनदेवज्ञानादेशानविसर्गेपुसदस्यतिमितससतधानासि
सर्वेनपदेपुसिताहसोदेवर्ष्येऽसिस्त्रसमित्यजादभ्युरात्रीःसपलाथापभाक्तासविभ्राजहन्वा
रिणश्चपूर्वकैवेनशलोभसित्यसतधानाभखादेनप्राग्भोपुर्देधिकारोहतिदधिभस्ये
युःसपानेतगणमिष्टेनायतसिलानानर्षपलकेनजुहवात्साविभ्यापुज्ज्योतिरित्यनुवा
केमवाप्राशानोनेप्रसदाखभ्यउपविष्टेभ्यःकारेप्रकात्रिष्यसावित्रीमध्यामादीनेत्रेचपा
दधिमुस्ताभिवलकीजावकीतिष्यदोगानाःसक्तान्माधवीणनाःसर्वेनपतिसहनोऽमस्तस
हनोवतुसहनइदवीर्षवदस्तस्यसं।इदस्येददेनपधानविष्टियामतरतित्रिरात्रनाधी
पीरत्नामनश्चानामनिसतनमेकप्रागुत्सगात्॥११॥वतिमावस्यायामिति सर्वानध्याय
॥१॥आशानेयोत्कावस्युज्जोभूमिचलनामपुसानेष्टतुसधिपुवाकालमन्सयेष्वभदर्शने
ससर्वेदेचन्विष्टेभ्यस्त्रिष्वेनाभुंकारेवातिरदवेनिशायाःसधिनैलमेरत्तरायेप्रामेप्रा
मान्निर्वीकीतिर्कीवतोमिश्रतीपतित्तदेशेनाभ्यर्षीभ्युदयपुनतकालेनिहारवादिप्रशक्
प्रातेस्वभेप्रामानेशमशानेभ्यगदेभोल्लसंगालसामशब्देषुसिंहावरितेचतकालेगु

श्रीभवेति धाना नमो नमि ति धानानां च तानां सक्तु सर्वेषु योज्ये हो सांने यथा र्थि वा भा ६ स पर्वा एण
 मधि पते ये स्वाहा येन वा यवा नति शा एण ६ स पर्वा एण मधि पते ये स्वाहा प्र मि भू सौ र्वा दि
 व्याना ६ स पर्वा एण मधि पते ये स्वाहा इति सर्वे इत मे कु कपा लं भू या म भौ मा य स्वाहे ति पा रा नाने
 सक्तु नामे कदेश ६ सूर्ये सुव्यापनि ह्यु यर्हि शा क्ता या ६ स्पृति लमुप लि प्या ल्को यो भ्रिय मा
 एण यो मां न रा ग म ते स क्ता वा म्पते स र्वा न धे ने ज प सा ने य पा इ पा र्थि वा ना ६ स पर्वा एण
 धि पते व ने नि ह्न ये न वा य वा न ति शा एण ६ स पर्वा एण मधि पते ने ने स्वाभि भू सौ र्वा दि व्याना
 ६ स पर्वा एण मधि पते व ने नि ह्न ति य वा न नि ह्न द यो प ध्या न ६ स क्ते त्से प वे भ लि ६ तर सा
 ये य पा इ पा र्थि वा ना ६ स पर्वा एण मधि पते ए ध ते व लि ये न वा य वा न ति शा एण ६ स पर्वा एण
 मधि पते ए ध ते व लि र मि भू सौ र्वा दि व्याना ६ स पर्वा एण मधि पते ए ध ते व लि रि स्व ने ने य प्र
 र्थे व ल क ते प्र लि र्वा म्पाने य पा इ पा र्थि वा ना ६ स पर्वा एण मधि पते प्र लि र्वा र्थे व ये न वा य वा
 न ति शा एण ६ स पर्वा एण मधि पते प्र लि र्वा स्वाभि भू सौ र्वा दि व्याना ६ स पर्वा एण मधि पते प्र लि
 र्वा र्थे व स त ना नु ले प न् ६ स न्ने य वा ज स्वा नु लि प स्ते स जो पि न य स्वे ति स क्त रो ष ६ स्पृति
 ल्य वे ना इ पा र्थि वा ना य नि नी पो प ति य्ते न मो क्त स र्पे भ्य र ति ति स्पृभि स पा य क्त म य त्त ज स र्वा ज
 न्पे सु रि ति तो य स्स न त या द ध्या र्मा नि वि श ने निः प रि धि च य री या द प र्थि व न प द्वा ज ही ति

देशस्येकपला नुरोधेन ग्राभेने भयसत्रयोगाद विरोधापन्नप्रपु विष्यन्नु पक्षि सु उ क ता बो क्षि
 ने निम्पुस मा धाए तन्नि श्रेष्ठे नै स्तो त्री त्य भागा विष्णुत्पाहु निर्ज हो लि ए पि बी योः प्रदि रो
 दि शो ए सि शु भ रा य ता ॥ त मि ह ए सु ष न् य शि वा न . स न् हे त य स्वा हा ॥ य न्ने क चि द्दु पे शि
 न म् स्मि न्क मी ति व ज्ज ह न ॥ न श्रे स र्वे ऽ शे म् ष्या ता जी व त्त . श र द् रा ते ऽ स्वा हा ॥ स प्ति
 भू ति भू मि र्दि श्ये ष्ये ऽ ष्ये ष्ये श्वोः प्र ता मि हा व नु स्वा हा ॥ म स्या भा वे बो दि के लो वि का
 ना भू ति र्भ व ति क र्मे ण ॥ इ ऽ प त्नी मु प ह् मे सी ता २ . सा मे ल्य न पा पि न भू पा न्क मी ति क र्मे णि
 स्वा हा ॥ आ ष्वा य ती गो म नी सु न ता य ती वि भ र्ति षा प्रा ण भू तो ऽ ष्य न्द्रि ताः ॥ ख ल मा लि
 नी मु ख्यं रा म स्मि न्क म ए पु प ह् मे ष्व ज ॥ सा मे ल्य न पा पि नी भू पा स्वा हे ति स्था ली पा ष्व स्य
 जुरो ति सी ता पि न पा पि श मा धि श मा धि भू सा र ति म् व न त्प दान म धे ष्या २ स्वा हा का र प्र द
 ना र्त्ति ष्ये न्ने वि त्ति व ति स्त र्ण शि ष्ये ष्ये ष्ये सी ता गो र्भ्यो ब ल्ति २ हर ति पु र स्तो धे न् प्रा स
 ने स ध न्वा ने नि धे गि ण ॥ ने त्वा पु र स्तो हि पा य त्प्र म न्ता ऽ ष्य न पा पि नो न म ए वा न्ने ष्य ह्
 ब ल्ति मे ष्ये ह रा ॥ त्री म मि त्य म द स्ति ए नो नि मि षा व र्ति ण ॥ प्रा स ने ने त्वा द स्ति ए नो गो पा य
 त्प्र म न्ता ऽ ष्य न पा र नो न म ए वा न्ने ष्य ह् ब ल्ति मे ष्ये ह रा त्री म मि त्य प ष्या दा भु वः प्र भु वो भु
 ति भू मि पा र्तिः स्तु न कु स्ते स्वा प ष्या दा पा य त्प्र म न्ता ऽ ष्य न पा पि नो न म ए वा न्ने ष्य ह्

लिने भ्यो ह रा मी म मि स घो न र तो भी म वा पु समा ज जो ले लो तर नः खे त्रे खे लो ग्दे ध्य नि गो
 पा य ल प्र मे सा प्र न वा पि नो म म ए पा क रो म्य ह व लि ने भ्यो ह रा मी म मि ति प्र क लो ह न्य स्वा ए
 ज्य रो षे ए च पूर्व च ह लि क र्म स्त्रि य म्यो प य जे र न्न च रि न लो म्य ह स्त्रि ने क र्म ति त्रा स्य ए
 भी ज ये ल् ४ स्त्रि ने क र्म ति त्रा ल ए आ नो ज ये ल् ॥ १८ ॥ इ ति पार स्वर वि र चिते न स्य स्ये
 मा ध्य दि नी ये दि ती प को ड समा स ॥ ६ ॥ श्री ॥ ६ ॥ श्री ॥
 अ ना गि तो षे न च श श न न न वं श्या नी या ड, हे अ प यि ता ज्य भा ग वि ष्टा ज्य इ ति र्जु सो
 मि रो ता पु ष्य रा त ती र्थो ष इ तो त ये भि न्ना ति या स श तं यो न स ह ले जो त्थ नि रो मे ष
 द ति दु र्ग त्थ नि वि ष्या न्क ला ये च का ह य क वो ह द य ना अ न रा ष्या ज ह ति ती
 शि य नि ने वा शे ज्य नि म ती जे मा व ला स त्ते नो दे वा य दि ध ने न स र्वे स्वा रु ति स्य
 ली वा क स्य अ य ए दे व ता न्यो इ त्थ नु लो ति शि ष क्ते च शि ष म प्र क्थि त्वा र्णी
 हि वि ष्या न्क दे व पृ त ना अ वि ष्य त सु म द्यु प वा अ दि का म ए ति न्यो ति य ध्य स्व जं ह न
 आ पुः स्त्रो ति य य म्य इ त्थ तिः अ य म प्रा इ त्थ म हि दे व य यो ह ति ग्ति वा अ स
 भ्यो म य धी इ रो त्थ वि ष्य क र्म ति र्भुं ज श्रे यः स म ने पि ह दे वा स न वा र्ज म न म न

राज

१७ स्वप्रत्ययवहासंनिहृद्विज्ञान-स्वाधीजापोनहासप्रवाकनिएन्युत्तरहोद्विज्ञानोद्विज्ञानमु
 पवेद्वेजोत्तरहतेउदकावके-शर्मिष्ठास्वासीतालोएरमनोनिध्यायाप्रिसीसमोएतजपत्य
 मन्त्रिणीहृतमोयंभएनरुम-सहस्रमत्तम-सुकीर्णसुके-यसादयभ्युनाविर्निमय्यादश्र
 यावंमेवृहिकेहोतिहेवीजावमैरिनिस्तुभिःस्वज्ञहमाहोहेतिज्ञास्नानमाभेवपरोद्व
 स्वन्प्रत्ययवहेसामेनिद्वसामुत्तराताअत्यचरोहंपासु-कीर्णियकोबलमदाह्र
 तामित्पुपेतात्तपंतिसुहेमतःसुचसंत-सुश्रीष-प्रतिर्णयत्तान-शिकानोवर्कःसंतु
 शहदःसंतुलनशिवाउतिस्वासाएविदीनाअवेनिद्विज्ञानपाद्वेअकिशहससंविहं
 त्युपोतिहंसहासुधास्वापुकेत्यजेनित्यत्रसाएयवाअसधामनिमित्तेवशिरपरंअस्युदा
 ताअथा-शरीरंअतुलोमाकान्येषंबीर-ऊहर्माप्रसावरायास्तिहाएकारो-दीरेवीश
 जाह्वापिजेत्परपमा-सप्राकेष्ययसायप्रमसाएकायसाएसा-स्यतीकक-
 ह्यपयित्तायनामाविहृत्प्राज्ञहीनूलोतिवि-शस्ससाहउपयंतिनिष्ठुति-समानं
 कर्तुंअतिमुंचमाना-कर्तुंस्वत्वतेककथःप्रजानतीर्मेथहदस-पहिचेतिमासती

स्वस्थ जातिनी भ्रष्टाणि शुभं नैव सो रा जी दे जीह्वा प्रवृत्ताग्निर्विषयं निषेधं शोभायमानां काना रूपाना
तु र स्वाडप स्ये स्वात्मा हा काष्ट कातपसत्त ष्यमाना जलानय भग कि मानु मि न् मृतेन दे स्प न्यसे
स्ने दे श संतो सु राणम भ वच्छे ची भिस्वसा भनानुसा मनु ष्या मा म क र्त्त क्त्यं य इंत्यन्वि
च्छ हात ता भक्त सम स्पतु मजो य चा द य म न्या बो अ न्यो म ति मा प्रयुक्तः स्वात्मा अ भ न्ने म
सु म तो वि श्वे दे हा आष्ट प्रतिष्ठान विदि र्दु रा धं मृया म ज स्य म् न तो य या द य म न्या आ अ
रु म ति मा प्र युक्तः स्वात्मा अ च व्युष्टि र्नु प र्दे ली मे ण य च मा शी म् न्तु वी नु र्प व पं व दि
हा वं सं र शे न्द्र सा स मान म डी र धि लो क मे क र्त्त स्वात्मा अ त स्प ग र्भ प्र य मा य पु ष
य मे क्तान दि भानं वि भ र्ति क्त्यं स्य का च र ति नि श्रु ति पु थ र्मे सै का स वि ता क्तानि य च्छ त्वा
हा पा प्र य मा यो च्छ सा धे नु र भ व ह्म ध मे साने य य स्व ती ह्यो त रा र्त्त मा र्त्त स्वात्मा यु क्त क्त
षु भानु भ ता ज्यो ति षा य ष्टि म् ह्म पा ष्ट व ली र शी के तु स मान म य र्त्त स्व प स मा ता वि भृ ती ज
हा म ज र्त्त य श्या मा स्वात्मा अ क्त ना प ली प्र य मे य मा गार न्द्रो ने जी त नि जी प्र जा ना म हा का र्त्त
ती व र्त्त मो र्त्त यं ह्म णे त्वा ज्यो ति या अ म्भु ज आ दि शो तो सै रा वे क्त स तं र्त्त जी सा पु र्थ य वे स

अहंकारात्प्रकृतौ न च देहस्य आत्मा परिहृतः कुम्भ आदौ भ्रू-कलशौ रूपेणो मस्य पत्नीहृत
तीसु वासाहयिज्ञेपे सिसुभगे तु कीर्त्येभ्यश्चान्तो म पूर्ण स्वस्वर्ण धनस्पते हिच सुभिन
पूर्येता हिचिद्वरिदमनुयेयोचसोनइतिचतुर प्रपधतेभ्यतहतोपुपुपतनाधापदति
तोत्रुक्ताणामुपवे श्योतहतउदकात्रं प्रतिष्ठा व्यस्थानीकक ई-वपयिताविनि ६ पुम्पुहाहम्
मीकोस्येत्तात्रुक्ताणामा मंत्र पतेवस्त-प्रविशामीतिवृक्तानु ज्ञातः-प्रविशत्प्रबंप्रपधेहि वं
अहंकारात्प्रकृतौ न च देहस्य आत्मा परिहृतः कुम्भ आदौ भ्रू-कलशौ रूपेणो मस्य पत्नीहृत
तीसु वासाहयिज्ञेपे सिसुभगे तु कीर्त्येभ्यश्चान्तो म पूर्ण स्वस्वर्ण धनस्पते हिच सुभिन
पूर्येता हिचिद्वरिदमनुयेयोचसोनइतिचतुर प्रपधतेभ्यतहतोपुपुपतनाधापदति
तोत्रुक्ताणामुपवे श्योतहतउदकात्रं प्रतिष्ठा व्यस्थानीकक ई-वपयिताविनि ६ पुम्पुहाहम्
मीकोस्येत्तात्रुक्ताणामा मंत्र पतेवस्त-प्रविशामीतिवृक्तानु ज्ञातः-प्रविशत्प्रबंप्रपधेहि वं
अहंकारात्प्रकृतौ न च देहस्य आत्मा परिहृतः कुम्भ आदौ भ्रू-कलशौ रूपेणो मस्य पत्नीहृत
तीसु वासाहयिज्ञेपे सिसुभगे तु कीर्त्येभ्यश्चान्तो म पूर्ण स्वस्वर्ण धनस्पते हिच सुभिन
पूर्येता हिचिद्वरिदमनुयेयोचसोनइतिचतुर प्रपधतेभ्यतहतोपुपुपतनाधापदति
तोत्रुक्ताणामुपवे श्योतहतउदकात्रं प्रतिष्ठा व्यस्थानीकक ई-वपयिताविनि ६ पुम्पुहाहम्
मीकोस्येत्तात्रुक्ताणामा मंत्र पतेवस्त-प्रविशामीतिवृक्तानु ज्ञातः-प्रविशत्प्रबंप्रपधेहि वं

१८ एतस्वतीचैवाजिनं वनासु मे दत्तवाजिनः स्वाहा सुपर्दे वृत्तान्तः सर्वादिः मन्त्रं तद् ईसा द ईसा
 मन्त्रं स्वस्ति इत्यादिः चामी शान्तमर्गदेः सा सुहाता न्मर्गी-प्रतिपद्ये लो वास्तु मे दत्त वाजिनः
 स्वाहा कर्त्तरी च विकर्त्तरी च स्वस्ति एतौ यथी स्व वनस्पती नरता न्मन्त्रं अ पद्ये लो वास्तु
 मे दत्त वाजिनः स्वाहा धाता रं च विधाता रं निधी ना धपति ईसा सुहाता न्मर्गी-प्रतिपद्ये लो
 वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा सोमः शिवमिदे वास्तु मे दत्तं वृत्तान्तं प्रजापती मर्गी-प्रतिपद्ये लो
 स्वाहा इति या इत्यादिः स्वसंभारानो व्येद्वर पलाका शास्त्रानि सुहाता न्मर्गी-प्रतिपद्ये लो
 गोमयं दधि मधु तं कुशान्द्रं च स्वासतो यस्यामे सुषो र्देः स्वस्ति धाव भिन्ना तिथीषु
 त्वय शब्द पर्यन्तं धो गोपापेतामिति इति गो सं धाव भिन्ना इति यत् स्वस्ति इति एव इति
 सं धो यो पापेतामिति ति ति पश्चिमे सं धाव भिन्ना इति अत्र च तद्वा फलान् स्वपश्चिमे सं धो
 गोपापेतामिभ्युत्तरे सं धाव भिन्ना इति ईसा सुहाता चैतरे सा धी गो पापेतामिति ति ति
 म्पदि दृपतिष्टते केता च ना सु केता च पुरस्तात् पापेतामिति ति ति ईसा इति सुके
 ता सो अ प दत्ता मर्गी-प्रतिपद्ये लो पुरस्तात् पापेतामिति ति ति इति इति इति मन्त्रा म्पि

दक्षिणतो गो वा यमानत्वमाह दामा एव दक्षिणतो गो वापेतामित्यलं वे गो पा य मान ५० राती
 हलमाहा जे प्रयेताभ्यां न मो सुतो मा दक्षिणतो गो वापेतामित्य य पश्चादीदि दि श्व माता
 गृहि श्व यश्चासौ वापेतामित्य अं वी दीदि वि प्रणोक्तगृहि को प्रयेताभ्यां न मो सुतो मा प
 श्चासौ वापेतामित्य यो तर्तो स्वप्नश्च मानव द्वाराश्चोत्त रतो गो वापेतामित्य तिबहु क वा अ
 न्यो वा पु हन व द्वा रासौ य प होताभ्यां न मो सुतो मो त रतो गो वापेतामित्य तिसे निष्पि सं य
 प हते यर्भस्य एत राज १० सी स्तु प मत्वा हा वे द्वा रा य वा इ इ स्य सत्त व सु मतो व ह्नु चिन स
 तम लं य प होत ल य ज या पशु भिः सस्य य नै कि चिद स्य य हतः सर्व धन सस्य प लाधु
 सै हतः तो त्वा शाले हि ष वी हा गृह ल त्र संतु सर्वत इ तितो वा स्ना ए मो जन म् ५ अ वा
 तो मणि का व धान मु त्त र पूर्व स्वां दि श्वि प् प व द न स्वभ्य कु क्वा न्का र्त्ती र्की त्त त्त न र्दि ष्ट का न्ती
 म न स ५ क प र्द का श्वा न्या नि च भि म ग लानि त सि नि मो ति मणि क् १० हा मु द्रो मी त्य प आ
 नि च वा यो हे व ती दाय वा हि व स क तु च भ र्द वि भ द्या म तं च्च रा प न्य स्य स्य प वं त्य प ली
 स र स इ एते व यो धा इ ती आ यो हि षे ति व ति म्भि त्तो वा स्ना ए मो जन म् ५ अ वा त-शीर्ष

२. शेषमेव जन्मपाणी प्रहात्यन्वये विमार्ष्टि चतुर्था १० श्यामभोगो दान-शुभु कारदपि च ११ ॥ १० ॥
 ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
 ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

साभ्याश्च वल्लिस्तान्भोजनमौषधौ रुद्रपुष्पासेना साभ्याश्च वल्लिस्तान्भोजनमौषधौ रुद्र
तैरुतः सेनासाभ्याश्च वल्लिस्तान्भोजनमौषधौ रुद्रपुष्पासेना साभ्याश्च वल्लिस्तान्भोज
नमौषधौ रुद्रपुष्पासेना साभ्याश्च वल्लिस्तान्भोजनमौषधौ रुद्रपुष्पासेना साभ्याश्च
त्वधो वानिरवतं स्पनु वानं पशुमवस्थेषु रुद्रैरुपतिष्ठते अथ नोत्तमाभ्याशानुवाकभ्यामैत
स्य पशोर्ग्रामे रुद्रैरुत्तमे जने वगो यतो व्याख्यातः पापसेनामर्थे तु सस्तस्य तु त्यक्तो गीर्हति
ला = अथ वृषो सर्गो ज्ञेयतेन व्याख्यातः कार्तिक्यां कौर्त्तमास्यां हेतव्यां वाश्वपुत्र्यस्य म
धेरा वा १५ सुसमिद्धमग्निं कृता त्वं रुद्रैस्तु त्वे रुद्रतिरिति पठन्तु स्तानि प्रसिद्धमा धरु
वाश्वभाष्ये रुद्रापापसेनामश्रुतमवेदेव तावजेता रुद्रैरुद्रा पशुवी पथेषु पशुपुत्र्याया रुद्र
येन वायुमहादेवा ये पशुनाथेति पुराणा अन्ये तु न रुद्रा रुद्रत्ववर्तन्ते पशुनाथान्ते समोत्तुन
स्वरुतिषोऽस्य नृत्वंति रुद्रांतपितृककार्त्तिक्यां वा वाश्वपुत्र्येण दपतिषो वा पूषेण
दये देहि तौ वै वशन्तु वीरिं रुद्रं समोत्तुन रूपेणोत्थे वक्रसाया पयस्त्रिभ्याः पुत्रो यथे च रु
पस्त्रिभ्यं स्यात्तमलं कृत्वा पूषेण रुद्राश्च तस्यो वस्तर्ष्ये साभ्यासेना रुद्रैरुत्तमे पतिषो रुद्रा

५१ भित्तौ न क्रीडते तीक्ष्णं च प्रियं एषा भावः सा प्रजन्तु वा शुभगाशा यस्मिन्नेषात् स मित्राः अदे मे देयतये तौ स जे
 न्कामे चकं दक्षिणे विष्णुर्लन भि स्पमभिने वयो भरित्यनु वा कशे ए स की सां य प सि पायल ६
 अ प विना द्वा स एण भो जयेत् पशु मये के कु र्बंति तस्य म लगवेन क लो व्याख्यात ८१ उ चो
 द कर्म द्वि च धि मेते मता धि के रा वी च १२ दौ च मे वेत रे वा मे क ल व वि रा व का श ही र म च द
 म्भानि र व नं संतः स ज के च वे को त्य ना दा शी च १३ स त क व द्रा तौ द क कर्म द्वि च धि प्र भ नि मे त
 मा शुभ द्या ना स्त वे नु ग जे पु र्म गा चां पा यं ती य म स कं च म यं त इ त्ये के व शु द्य वे तो १४
 भि मि ता य गा र्मि स मा व सा रि ता ये रु द को त स्य ग म ना च्छ ला पि ना द सं ये न मा रि त ये
 त्वा स्मी यु मा पि ने त र १५ सं यु क्त मे यु नं चो द कं शो च र्मु द कं क रि ष्या म स र ति कु र्म भं
 म्भवे न पु न रि त्य श त व र्ध ये त क र्म भ मे वे त रे मि न्से र्वे ज्ञा त ये १६ के भु य र्थ या स सं मा तु
 रु वा इ श क ह्य स मा न प्र म वा से वा या व त्से वं य म नु स्मि रे पु रे क व स्तुः प्रा सी ना वी ति
 नो स व स्य ना मि क ष प नी ष ह्य प नः शो शु च द भ मि ति द रि ष्य म्भु स्वानि म त्क ति प्रे ता के
 द क १७ स क्त्वा सि च पं ज लि ना सा वे त उ द क मि तु ती र्णा १८ चो दे श शा दू ल व तु ष मी

हृदयस्यैतान्नयने देवदत्तस्यैतान्नयने नयति शैलीभक्तः कनिष्ठपुत्रिकेति श्रीनिवेश
न हरे विष्णुसंदयत्राणि विद्वाचमेव कर्मणि गौरस्यैषो ह्येतास्यैतान्नयने प्रकृत्या क
म्यप्रतिशक्तिविशयं पुत्रस्यैषो ५५ शापिनोऽपि च न कर्मकुर्यात् प्रकृर्वीहं कीत्यास
व्यावादिनात्मश्रीपुत्रमाह संप्रेतायपि इंद्रनाबने जन्मदा प्रत्यवने जने पुत्रास्यैत
मृतास्येता ५६ शक्तिहीरोदके विलयस्यैतौ ५७ प्रेतावस्ताहीति विहाव ५८ शावमाश्री
वेदशावनेकेनसा ध्यायनधीरीराज्ञेयानिवर्ते रनेतान्नयने ६० शावमाश्रीवेदेन
एतान्निकुर्वन्प्रेतस्यैतौ शासनं प्रविशोपु रान्तोके द्वादशप्रवेशेनमिदं समाप्तमित्ये
पत्तेश्चैतौ च सावयेवैदे मातामहयोश्च स्त्रीणां च प्रतान्ना प्रतान्नमितौ कुधीरं स्तश्च
तच्छ्रित्तश्चैतौ यन्कुरुवात्प्रभृति कृतोदका कालशेषमीदृशीत म्भेदेक हावविहाव
वाचकाभादकान्पुत्रिके न्यस्यैतौ सखिते वं पु मातुलभाणि ने यानां प्रानां च स्त्रीणां मेका
दशमपुत्रा न्यासना न्योत विहामाहं मुक्तप्रेता येदि प्रपणामयेके सुतिपि इकरे

प्रथमपिद्वयं प्रोक्तं स्यात्पुत्रव्याप्तयेति तत्र चतुर्थः सवसरं पृथगेके राकस्य व्यायत्तुन
 चतुर्थः पितृभ्यो भवतीति श्रुते रत्नान्नमसैश्चोत्तराण्यो दकुंभं देवात् सैत्यपिसंवनसरं
 पितृभ्यो केनिपृणंति १- यगुश्चरह्मा व्यायामयेण प्रीत्यरीप्यपलाशकासां निरुति
 पृथिव्यवरोषाकराण्यनियोजनप्रोक्षणान्यहो कुर्वीथ ज्ञान्यसरेष शवे ह्वात्तस्मीमप
 रुः सं च च यो ह्वात्तस्मीमप रुः सं च च यो ह्वात्तस्मीमप रुः सं च च यो ह्वात्तस्मीमप
 लीपाके सं व पा ह्वात्तस्मीमप रुः सं च च यो ह्वात्तस्मीमप रुः सं च च यो ह्वात्तस्मीमप
 वरायानि तु होति पश्यं गं ह्वात्तस्मीमप रुः सं च च यो ह्वात्तस्मीमप रुः सं च च यो ह्वात्तस्मीमप
 म्रुयदिममनु प्रापयेति तिमंतं हेना वकारयेत्तु वा ॥ अथोच कीर्णं प्रापयित्वा
 म् अनावास्या पां चतुर्थये गृहं मं पृथुमालभतेति र्हेति वाक्ये ज्ञेयजेता फ
 व दाम हो मो भूमी पृथु रो वा श अपरांता ह्वात्तस्मीमप रुः सं च च यो ह्वात्तस्मीमप
 वत्स रं भिहाव प्यं च से स्ता कर्म परि कीर्त यज्ञ या प र मा न्य जती नु हो ति एते संग

किंचित्तमसामिन्द्रः सं ब्रह्मस्यतिः सं मायमप्रसिंचतु प्रज पाच धने न चेत्येतदेव प्र
 यायित्तमम् १५ अथात्त सभाप्रवेशनक्षेत्रं सभा मन्व्यतिसभागिरसिनादिर्नात्त
 सा सित्त्वधिर्नामाहितस्येते नम इत्यथ प्रविशति सभाक्षेत्रं सभाचमानमित्तस्यो
 भे प्रजापतेर्देहितस्ये सुचेतनो यो मानविद्या उपमास्ति ऐ नमचेतनो भवतु सं
 गये इति यद्विषय इमेत्यजयेद्भीष्म इत्युमागमविशोऽप्रतिवाप्य अस्याः पश्चि
 द्देवै शान् स्यात्तु दुष्टरेतन इति सपदि मन्व्येत कुक्षे पमितित्तममिन्द्रं प्रपते या
 तशवाहरा क्वात्तन्मन्यो को धस्यनाग्नानातो देवा ब्रह्म चरिणो विनयेतु सुमे
 धसः शेरं लृष्टिदी च्छास्येते को धंन यामिसिगर्भमन्व्येत सहासादित्यथपदि
 मन्व्येत दुग्धोषमितित्तममिन्द्रं प्रपतेतांते वाचमास्य आदते हृदयमादधे षत्रयत्र
 निहित्वा वाक्कांततस्तत आददे षदहात्रवीमित्तत्सत्यमधुगमित्यधस्येतदेव व
 षी कक्षिणम् १६ अथातो हयरोहताम् वृद्धं केतिरंघं सं प्रेष्यन्नि युक्त इति योक्तेः

वारयेतेतनीवा म्भारो रूपां आरुणत मुष्टुमा रो स्य प्रमिमंत्रयतेना एोसिवा सुदेव
त्यः स्वात्मिमा सं पारयेतिरा सभ मा रो स्य प्रमिमंत्रयते न्मो इोसिश्च इ नन्मा प्रे यो
वे हिरेता म्भारिमा सं पारयेतिन दीमुतरि य प्रमिमंत्रयतेन मो रुद्रापा सु
वदे स्वात्मिमा सं पारयेतिना व मो रो स्य प्रमिमंत्रयते स्वना व मित्युत रिष्य प्र
मिमंत्रयते सुवा माण मिति व नम भिमंत्रयते न मो रुद्राय व न सप्रह स्वात्मि
मा सं पारयेतिगि रि मा रो स्य प्रमिमंत्रयते पंचात न मा रो स्य म भिमंत्रयते स्व
स्व न मा रुद्राय पितृ सदे स्वात्मि प थी सदे स्वात्मि मा सं पारयेति इम शानमनि
मंत्रयते न मो रुद्राय पितृ सदे स्वात्मि मा सं पारयेति गोप्यम भिमंत्रयते न मो रुद्राय
स कृत् पितृ सदे स्वात्मि मा सं पारयेति य वचान्प्रापिन मो रुद्राय ये चहु पाडु
इोस्ये वेद ५० सर्व मिति श्रुते शिवा बधूतो भिमंत्रयते सिग शिन व द्यो शिन म
हो भ स्तु ता मा हि ५० शी रि ति शिवा वा स्यं मा ना म भिमंत्रयते शिवा ना मे ति वा कुभि

वा दृश्यान्मभिमंत्रयते हि रूपवर्षा शकुनेरेवानां प्रहितं वा यमदूततमस्ते अ
 स्तु किंवाकाकीर्णो ब्रवीति न्द्रे म्यो ह्येवति स्त न पिस्तु म भिमंत्रयते शिरानो बर्षाः
 संतु शिवा न संतु विद्युत शिवा न स्ताः संतु वा सोऽस्त्वे स्रज सिंह वरु चित्ति ते म्यो ह्ये
 व भवति लक्ष्णं हृत्तम भिमंत्रयते मात्तु शत्रु नि व र शु नी वा तो मारा न ये पितो हं दुः
 शं कु रा स्ते प्ररो हंतु निवाते का भि वर्ष ता श्रिष्टे मूलमाहि हं सीत्व च म्निने स्तु व न
 स्पते स्तस्ति मे स्तु व न स्पत इति स पक्षि कां चि ज भे स त त्पति गृह्णाति यो ह्य द द्वा
 तु पक्षि वीत्वा प्रति गृह्णाति त्प च य हो द ने त भे त त त्पति गृह्णाति यो ह्य द हा तु
 पक्षि वीत्वा प्रति गृह्णाति तित स्प द्विः प्रा श्नाति व्रत्ता ता श्ना तु व्रत्ता ता प्रा श्नाति चि
 त्प च य दि मं च नं लं भे त न त्पति गृह्णाति त स्प त्रिः प्रा श्नाति व्रत्ता ता श्ना तु व्रत्ता
 ता प्रा श्ना तु व्रत्ता ता विवा तिति अ चि ते धी त्वा धी त्वा नि रा क र ए णं प्रति क मे वि
 च स्र ए णं ति ह्यो जे म धु य द्द व क र्णं भ्यां भ रिसु शु व मा ता रु वी च्छु नं म पि व्रत्ता ए

यद्वचनमसिद्धस्तत् ५२ इति केमेविचतुर्णामसिद्धस्तको एोमि एनिर मि शक्तिर सति
रा कर एमासिद्धस्तको एोमेविशका चान्तापिद चामितिए प्रतिष्टस्त कर ए कं ठ्योरस एके
एमे धामाहु ई गृ हण धारणे ज्ञारण शक्तिर्मैपि ५३ इत्या पायंतुमे गानि वा क्वा ए
श्व ह्युः श्रो त्रय शोत्र ल रूपमे युतम धीतं श्रो थ्याज धे प्याम्य रुमितिष्ट त न्मे न सि
तिष्टत १५ इतिकात्यप न गृ ह्य त्त्वेत्तीयंकारां श्व च स्या संल मा मिमकारित् अया
त सार्थे हेतेज्ञाना न विधिं वा स्यास्याम नत्र मन्त्रादि पकीमेनसे प्राप्ते सार्थे विधान कु
र्क ज्ञे इंकारवित्वा स्वासिकं न द्र श्या प्रे प्रेयादि धतुर्दितु च स्वाकल एा सुदिह एषा स्या
पयित्वाततो म धे पं चमे कल शं स्त्राना र्थेती र्थे देक मा वृदिते च मुक्ता प्रियं न नाग केस
हसु च विज्ञातय कार्क प्रथमे आश्रे ये अयमदिहिं दात्री अग्नि र्भ्यातीति ह वी ई सं पुके
नमो स्तु सार्थे म् इति त्रयं जपित्वा तनोने र्थे त्प अ म्भवेत्य स्यादितीणि नमो स्तु सार्थे म्
इति त्रयं जपित्वा ततो रामयेना पुर ये गा आनोनि पु त्ति होयो वेते तीणि सं पु केनमो
स्तु सार्थे म् इति तीणि जपित्वा तत ई शानेतमी पान न मले इति हे सं पु केनमो स्तु स

५५ र्थं भवति त्रयं जपित्वा मध्ये प्रथमं कलशं स्थापयित्वा तर्पणीं चोदयित्वा कमादाय रुद्राभ्यां च नमोऽस्तु
 र्थं भवति त्रयं जपित्वा स्नानेनैका रात्रिस्तकलत्रं कंसापत्पं च इमं स्नायत स्वः प्रभारं मि-
 ष्णं कां कर्षित्वा तत्रैव स्नानं करोति हो वनं रक्षिष्य इत्या सल्लो हो हो मिमं वै स्नानं पितृभ्यु म
 मति इमं प्रोक्त्या सर्वं देवतं तिलमिव चरुं प्रो व पितृभ्यां नमोऽस्तु स्नानं मे वै-
 स्नानं कस्तु जलं तत्र स्नानं करोति हो वनं रक्षिष्य इत्या कृती कृता सिद्धं कृतं दत्त्वा कस्तु कस्तु
 मला रात्रिं पितृभ्यां नमोऽस्तु स्नानं त्रयं सत्त्वं सत्त्वं लोकात् कृता नोऽस्तु न व स्नानं सोपहा रा
 एषा वा पीय इच्छात्तत्त्वं कस्तु र्भिक्षं कृती स्नानं त्रयं धुवर्गं पुत्रो गृह्णायात्तत्त्वं
 तेषु कलेः शिष्टं न भवतीति च च न नो ततोऽस्नानं भोजनम् इति - इन्द्रगणेश चोदये
 र्थं कः कालो भवद्यद् शालिवाहुराके कार्पा कस्तु इति न नं स्नित

